रानी अहिल्याबाई
की जयंती पर शत शत नमन

5-6 मई 2022
मूल्य : 5.00 रुपये

मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

पंजीयन क्रमांक : MPHIN36490
मासिक जागरण पत्रिका

श्री रामनवमी शोभायात्रा पर जेहादी हमले

जनजाति की मांग डी-लिस्टिंग

जनजाति समाज द्वारा निकाली गई डी-लिस्टिंग महारैली

जनजाति सुरक्षा मंच के आव्हान पर जनजाति समाज ने एकजुट होकर समाज से धर्मांतरित होकर ईसाई व मुस्लिम बने समाजजनों के खिलाफ डी-लिस्टींग का आव्हान किया है जो जनजाति समाज की परंपराओं और धर्म का पालन ही नहीं कर रहे है उन्हें जनजाति समाज को मिलने वाला लाभ उठाने का कोई अधिकार ही नहीं है, (सरकार व समाज को भ्रम में रखकर अब तक लाभ उठा रहे थे) इस मांग को लेकर जनजाति समाज ने मालवा प्रांत के हर जिले से हजारों की संख्या में रैली निकालकर अपनी बात शासन-प्रशासन व राष्ट्रपति तक पहुँचाई है जिसका आम समाज ने भी समर्थन किया है और रैली में जुटे वनवासी भाईयों का स्वागत, सम्मान व जलपान की व्यवस्था की है।

जनजाति सुरक्षा मंच के आव्हान पर डी-लिस्टिंग महारैली

डि-लिस्टिंग के लिए निर्णायक आंदोलन

जनजाति विकास मंच द्वारा डीलिस्टिंग महारैली संपन्न

धर्मांतरण करने वालों को जनजाति की सूची से बाहर किए जाने की मांग

जिन्होंने परंपरा-संस्कृति छोड़ धर्मांतरण कर लिया, ऐसे लोगों को डीलिस्ट करें

जनजाति समाज छोड़ने वालों को करें सूची से बाहर : विशाल

जनजाति विकास मंच ने शहर में निकाली डीलिस्टिंग महारैली

जाग्रत मालवा
इन्दौर दिनांक 5 मई 2022 मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN36496
वर्ष : 01 अंक : 10

वैशाख–शुक्ल
युगाब्द ५१२४

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
अरुण सपकाले
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा

मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी–1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731–3551341

Email :
jagrutmalwa@gmail.com
jagrutmalwa

स्वामी – विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए–11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी–1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित।
संपादक अरुण सपकाले
फोन नं. 0731–3551341

अपनी बात

ॐ

भारतवर्ष त्यौहार प्रधान देश है यहां हर धर्म के अनुयायी अपना धार्मिक उत्सव पूर्ण गरिमा व स्वत्रंतता के साथ मिलजुल कर मनातें आ रहे हैं बहुसंख्यक हिन्दू समाज सहिष्णुता से सभी धर्मों को समान आदर भाव देकर उनका सम्मान करता आ रहा है। लेकिन विगत कुछ वर्षो से उसी हिन्दू धर्म के त्यौहारों पर ग्रहण का साया मंडराने लगा है। कुछ विधर्मी तत्व इन त्यौहारों के उत्साह को मातम में बदलने का कुत्सित प्रयास करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे है। विशेष रूप से धार्मिक त्यौहारों पर भय का माहोल बनाकर सहिष्णु हिन्दू समाज को आक्रोशित करने का प्रयास भरपुर कर रहे है। खरगोन, करोली, जोधपुर दंगे अप्रत्याशित नहीं है बल्कि सुनियोजित है। अगर इन घटनाओं को गंभीरता से न लिया तो आने वाला समय हिन्दुस्तान के लिए शुभ नही होगा। शासन-प्रशासन को सचेत रहकर इसकी तह में जाकर साजिश रचने वालों को कड़ी से कड़ी सजा देनी ही होगी।

भारतीय संस्कृति पर यह कुंठाराघात अब असहनीय होता जा रहा है। बहुसंख्यक हिन्दू समाज को अब जाग्रत होना होगा और इस साजिश को समझकर उसका प्रतिकार करना होगा कि भविष्य में किसी शोभायात्रा पर पत्थर फैकनें की कोई सोच भी नहीं सके। हिन्दू समाज का जागरण बहुत आवश्यक है अगर हम अब भी नही जागें तो हमारी संस्कृति पर चोट करने वालों की हिम्मत बढ़ती जाएगी और जीना मुश्किल हो जाएगा।

धर्मांतरण संविधान की मूल भावना पर आघात पहुँचा रहा है, इसका फायदा धर्मांतरण करने वाली संस्थाए भोले-भाले जनजाति समाज को ईसाई व मुस्लिम बनाकर कर रही है, वे चालाकी से इनका नाम नहीं बदलते है जिसके कारण इन्हें फायदा मिलता है बाकि परम्पराए पूजा पद्धति रहन-सहन संस्कृति सबकुछ विदेशी कर देते है और लाभ जो कि संविधान प्रदत्त है, जनजाति समाज के लिए ही है, उसका फायदा उठाकर सांसद, विधायक, सरपंच, आईएएस आफसर, डॉक्टर आदि बन जाते है और स्वंय लाभ अर्जित करते रहते है मूलरूप से जनजाति समाज को इसका कोई हित मिलता नहीं दिखता। इसी षड्यंत्र को जनजाति समाज ने जागरण कर हर बन्धु तक पहुँचा दिया, इसके विरोध में समाज अब पूर्ण रूप से जाग्रत हो गया है। डी-लिस्टिंग के मुद्दे को लेकर म.प्र. के मालवा और निमाड़ क्षेत्र में प्रभावी आन्दोलन जारी है धार, झाबुआ, देवास, आलिराजपुर, रतलाम, बड़वानी, बुरहानपुर की बड़ी-बड़ी रैलियां इसका प्रमाण है। डी-लिस्टिंग की मांग जबरदस्त तरीके से प्रभावी रैलियां जनजाति सुरक्षा मंच के बैनर तले हो रही है। जनजाति समाज की इन रैलियों में डी-लिस्टिंग के पक्ष में प्रभावी तर्क रखे जा रहे है।

खरगोन दंगा एक सुनियोजित षड्यंत्र

खरगोन में हुए हिन्दूविरोधी दंगों की रिपोर्ट अब अखबारों की हैडलाइन से उतर रही हैं, लेकिन जैसे-जैसे दंगों की आग कम हो रही है वैसे-वैसे दंगों की राख के नीचे से बहुत कुछ प्राप्त हो रहा है। जो प्राप्त हो रहा है वो अप्रिय भी है और अवांछनीय भी है।

खरगोन में श्रीरामनवमी के दिन जो हुआ वह बहुत बड़ा षड्यंत्र था, सरकार व मीडिया की रिपोर्ट कह रही हैं कि खरगोन में जनजीवन अब सामान्य होने लगा है, जिंदगियां पटरी पर लौटने लगी हैं। लेकिन ऐसा नहीं है, कई परिवारों की जिंदगियां अब कभी पटरी पर नहीं लौटेंगी। खरगोन के वो मोहल्ले जहाँ हिन्दू -मुस्लिम एक साथ रहते थे वहां पड़ौसी मुस्लिम भाइयों ने ही पड़ौसी हिन्दू के घर में लूटपाट एवं आगजनी की। मुस्लिम मित्र द्वारा ही गली के मंदिरों में आग लगा दी गई और मूर्तियों को खंडित करके नाली में फेंक दिया गया। माताओं, बहनों के साथ अभद्रता की। मुझे खरगोन की उस रात के बारे में सोचते हुए कश्मीर में 19 जनवरी 1990 के हिन्दुओं के साथ जो हुआ उस अत्याचार की याद आती है। वही रात जिसके बारे में द कश्मीर फाइल्स बनी है। कश्मीर और खरगोन में जो हुआ वो घटनाओं और तथ्यों के आधार पर मेल खाता है और लगता है सोशल मीडिया न होता और सरकार व सामाजिक संगठन घटना के तुरंत बाद सक्रिय न होते तो द खरगोन फाइल्स बन ही गई थी।

सुनियोजित था खरगोन दंगा ! खरगोन में श्रीरामनवमी के दिन हुए दंगे पर कुछ लोगों ने तर्क दिया कि पथराव इसलिए हुआ क्योंकि मस्जिद के सामने इस्लाम को लक्षित करके नफरती नारे लगाए गए थे। वास्तविकता में यह तर्क पूरी तरह झूठा है क्योंकि यदि ऐसा होता तो मुस्लिमों को मस्जिद पर, अपने घर पर पत्थर, बंदूकें, तलवारें, फरसियां इकट्ठे करने पड़ते। साथ ही पत्थर, फरसियों के अलावा मुस्लिम घरों से पेट्रोल बम भी फेंके गए हैं तो अचानक घरों की छतों पर यह पेट्रोल बम और बाकी सब कैसे आ गए ? पेट्रोल बम बनाने की तो प्रक्रिया होती होगी तो इसका सामान्य सा अर्थ है कि दंगे की तैयारी बहुत पहले से चल रही थी, जिसमें या तो पेट्रोल बम कहीं से लाकर मुस्लिमों ने अपने घर पर रखे अथवा कोई प्रशिक्षण प्राप्त करके घर पर ही बनाये हों। इसमें प्रशिक्षण प्राप्त कर घर पर बनाने वाली बात अधिक पुष्ट दिखती है क्योंकि बम कहीं से आते तो गुप्तचर विभाग को पता चल जाता। अन्य और विशिष्ट कारण जिनसे यह हमला सुनियोजित लगता है और यह सब कारण एक साथ होने से हमले की सुनियोजितता स्पष्ट होने लगती है। मुस्लिम बहुल मोहन टॉकीज क्षेत्र की लगभग सभी दुकानें,अमन नगर की सारी दुकानें, श्रीरामनवमी वाले दिन बंद थीं, जो दुकानें खुली थीं वह भी तीन बजे बंद हो गईं, इसी तरह अमन नगर की दुकानें भी बंद थीं। मुस्लिमों का बाजार जवाहर मार्ग से लगा हुआ है, रविवार को यहाँ हाट (विशेष बाजार) लगता है लेकिन श्रीरामनवमी वाले दिन यह बाजार नहीं लगा और श्रीरामनवमी वाले दिन रविवार था इसी तरह संजय नगर में काम करने वाली मुस्लिम महिलाओं की छुट्टी रखी गई। मुस्लिम बस कन्डक्टर व ऑटो-रिक्शा चालकों ने भी श्रीरामनवमी के दिन छुट्टी रखी। यह सब अवकाश संकेत करते हैं कि यह सब शाम को दंगे की पूर्व तैय्यारी और योजना के शत-प्रतिशत क्रियान्वयन के लिए रखी गई थी, ताकि सभी मुस्लिम अपने-अपने मोर्चे पर पूर्व और पूर्ण तैयारी के साथ रहें और सायं को समय पर योजनाबद्ध हमला कर सकें। साथ ही जब शोभायात्रा पर तालाब चौक में हमला हुआ, प्रशासन उसे नियंत्रित करता उसी समय खरगोन के दूसरे क्षेत्रो में भी हमले इत्यादि प्रारम्भ हो गए, आगजनी और हमलों की खबर आने लगीं इससे भी स्पष्ट होता है कि यह दंगा सुनियोजित था, इसकी पूर्व तैयारी भी थी ।

घटनाएँ जो रुला देती हैं-

मैं विधवा हूँ...मायके गई थी मेरा घर जला दिया - खरगोन की मंजुला केवट विधवा है और दो छोटे-छोटे बच्चे हैं, स्वास्थ्य गड़बड़ हुआ तो मायके गई हुई थी, श्रीरामनवमी वाले दिन दंगाइयों ने इनके घर का दरवाजा तोड़कर वह सब कुछ लूट लिया जो मंजुला ने सिलाई करते हुए बच्चों के भविष्य के लिए संवारा था। दंगाइयों ने घर में रखी भगवान की मूर्तियों को फेंक दिया और पूरे घर में आग लगा दी। मंजुला और उसके बच्चों का भविष्य संकट में है कि कैसे अब वह घर को ठीक कर पाएगी और कैसे गृहस्थी चल पाएगी।

मुस्लिम मेरे पड़ौसी हैं पड़ौसी धर्म अच्छे से निभाया, मेरा कान फट गया - मधु फुलकर, इनका घर हिन्दू मोहल्ले के अंतिम छोर पर है और इनके घर के तुरंत बाद मुस्लिमों का मोहल्ला शुरू होता है। श्रीरामनवमी वाले दिन खिड़की तोड़कर एक दंगाई इनके घर में घुसा, बाकी बाहर खड़े रहे। जब महिला ने विरोध किया तो उस पर सब्बल (लोहे का भारी हथियार) से हमला करना चाहा और बाद में महिला को पकडकर उनके बाजू, पीठ, चेहरे पर वार किये। कान

में से बालियों को ऐसा खींचा कि कान ही फट गया और मंगलसूत्र इत्यादि भी गले से छीनकर, घर में कपड़ा जलाकर आग लगा दी। संजय नगर के महेश पाटिल, इनके पीछे मुस्लिम मोहल्ला है और इनके घर से लगा हुआ घर भी मुस्लिम का ही है, अंदर रखी मोटर सायकल और बाकी सामान जला दिया। इन दोनों के घर पूरी तरह से लुटे और जले लेकिन पड़ोसी मुस्लिम के घर का पर्दा भी नहीं जला। इससे दो बातें स्पष्ट होती है कि यह दंगा न केवल हिन्दू विरोधी था वरन इसके लिए हिन्दू परिवारों की सूची भी पहले ही बना ली गई थी कि इनके घर को नुकसान पहुंचाना है।

अंतहीन मार्मिक घटनांए - खरगोन में हर हिन्दू घर में लगभग एक जैसा ही घटनाक्रम हुआ पहले उस घर का दरवाजा तोड़ा गया, कीमती सामान को लूटा गया, घर में बने मंदिर या पूजा के स्थान की मूर्तियों को खंडित किया गया और जलाया गया और बाद में गैस सिलेंडर निकालकर घर में आग लगा दी, दंगाईयों ने रास्ते में आने वाले सभी मंदिरों को भी ध्वस्त करने के प्रयास किया, मूर्तियों को खंडित करके उन्हें नाली या सड़क पर फेंक दिया और मंदिर में आग लगा दी। उपद्रव करते हुए ये युवक चिल्ला रहे थे 'तुम्हारे घर की महिलाओं को ले जाएंगे'' और 'रेप करेंगे' इत्यादि।

सेवा भारती का आव्हान समय है एक होने का - खरगोन में हिंसा ने जिनका सब उजाड़ दिया, उनके लिए सुबह होने पर खरगोन के नागरिकों ने स्वयंस्फूर्त होकर व सेवा भारती जैसे समाजसेवी संगठनों के माध्यम से सेवा कार्य प्रारम्भ किया। जिन्हें भोजन की जरूरत थी उनके लिए भोजन की व्यवस्था तथा जिनके घर का सब सामान जल चुका है उनके लिए नए कपड़ों, बर्तन, नित्योपयोगी सामग्री व राशन की व्यवस्था की गई। इस संकट काल में सबने अपने- अपने सामर्थ्य के अनुसार सहायता की। संकट हमें एक कर देते है और खरगोनवासियों ने बताया कि यही समय है एक होने का, नहीं मतभेदों में खोने का।

खरगोन का खर कौन - पहले कुछ संगठन जैसे पीएफआई, कहा

जाता है कि इसी संगठन ने खरगोन दंगों का षड्यंत्र रचा था और केवल खरगोन ही नहीं पूरे देश में श्रीरामनवमी पर हुए हमले इसी संगठन द्वारा करवाए गए हैं। मध्यप्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में इस संगठन के कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण शिबिर(ट्रेनिंग कैंप) भी आयोजित हो रहें थे। इंदौर में बड़ा हमला करने की योजना बनाते हुए पकड़ाए गए अल्तमस इत्यादि भी इसी संगठन से सम्बंधित हैं। दूसरे वो जो दंगा करते हैं, जो अपने आका के आदेश के बाद कुछ नहीं सोचते। किसी का घर जलाने पर, किसी पर गोलियां चलाने पर जिन्हें लगता है कि उन्हें उनका खुदा जन्नत देगा और जिन्हें उपद्रव करने में ही आनन्द आता है, फिर तीसरे जो इनकी वकालत करते हैं, ये वकालत करने वाले न्यायालय से लेकर टीवी, ट्विटर और नुक्कड़ नाटकों तक सब जगह अपराधियों को मासूम और पीड़ितों को अपराधी बताने का कार्य बड़ी निष्ठा से करते हैं और चौथे वो जो इन अपराधियों को धन देते हैं, इनका केस लड़ते हैं, इनका घर बनवाते हैं, घर की आजीविका चलाते हैं ताकि ये जब जेल से छूटें तो फिर नया अपराध करने को तैयार रहें। ये सब खरगोन के खर हैं जो खरगोन समेत पुरे भारत में अमंगल करने के लिए कार्य कर रहे है। इन्हें समझना होगा, इनसे बचना होगा और इनका प्रबल विरोध करना होगा ताकि फिर खरगोन न जले और कोई नगर या गाँव न जले। - **अमन व्यास**

आद्य संवाददाता पूज्य श्रीनारदजी के भक्ति-सूत्र पत्रकारिता के लिए प्रेरणा

वैशाख कृष्ण द्वितीया को नारद जी का जन्म हुआ और इसी दिन उदन्त मार्तंड को प्रारंभ करते हुए युगल किशोर शुक्ल ने कहा कि यह आद्य पत्रकार का जन्मदिवस है और इस दिन हिन्दी पत्रकारिता का सूर्य उदित हुआ। आज कहा जाता है कि जिसके पास सूचना है वह संपन्न है। आज तकनीकी युग में जब सभी प्रकार के माध्यम सूचना दे रहे हैं ऐसे में सच्ची सूचना के बारे में सोचना पड़ता है। ऐसे में देवर्षि नारद का स्मरण होता है। एक लोक से दूसरे लोक में वे सूचना प्रदान करते थे। हमारे आद्य पत्रकार जिनका काम था जानकारी प्रदान करना। नारद जी को लोकसंचारक कहा जाता था। **नारायण-नारायण** की पुकार के साथ वे एक लोक से दूसरे लोक में सूचना प्रदान करते थे। सूचना जगत में उनकी एक अलग छवि निर्मित की गई परंतु सत्य यह है कि उनके द्वारा दी गई सूचना से लोकहित ही होता था। उनकी सूचना सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करती थी। घूमते हुए सूचनाएं एकत्रित करना और उसे उन लोगों तक पहुंचाना जिन्हें उसकी आवश्यकता है। यह वास्तव में पत्रकारिता का धर्म है। उन्होंने मूल्य आधारित पत्रकारिता की स्थापना की। नारद जी ने एक की बात दूसरे को बताई जरूर परंतु उसमें से क्या बताने योग्य है अर्थात आचार संहिता और गोपनीयता का भी पालन किया। वर्तमान में जब हम आद्य पत्रकार नारद जी की जयंती पर उन्हें याद करते हैं तो लगता है आज के मीडिया को भी आचार संहिता का इसी प्रकार से पालन करना चाहिए। इससे समाज में लोकहित की पत्रकारिता को स्थान मिलेगा। सूचना समाज जिस अविश्वसनीयता के घेरे में है उससे उसे निजात मिलेगी। उन्होंने अपने 84 भक्ति सूत्रों में जिन तत्वों को शामिल किया वह सामान्य जीवन ही नहीं बल्कि मीडियाकर्मियों के लिए भी प्रेरणा स्रोत है।

- डॉ. सोनाली नरगुन्दे

दो बार काला पानी की सजा भुगतने वाले भारतीय-स्वातंत्र्य वीर सावरकर

डॉ. सुब्रतो गुहा

पुण्यभूमि भारत को ब्रिटिश शासन की गुलामी से मुक्त करवाने वाले अमर क्रान्तिकारियों में अग्रणी भूमिका निभाने वाले **विनायक दामोदर सावरकर** का जन्म दिनांक 28 मई 1883 को नासिक जिले के भांगुर गाँव में हुआ। पिता दामोदर पंत सावरकर और माता राधाबाई की वात्सल्यपूर्ण छत्रछाया में उनका लालन पालन हुआ। परन्तु मात्र नौ वर्ष की आयु में माता तथा सोलह वर्ष की आयु में पिता के स्वर्गवास के पश्चात् बड़े भाई गणेश ने उनके पालन पोषण तथा शिक्षा की जिम्मेदारी का निर्वहन किया।

अत्यधिक होनकार विद्यार्थी विनायक ने नासिक के शिवाजी उच्चतर विद्यालय से मेट्रिक और पुणे के फरग्युसन महाविद्यालय से कला में स्नातक उपाधि अर्जित की। सन् 1909 में उन्होंने लंदन में बार एट लॉ परीक्षा उत्तीर्ण की और बैरिस्टर बने। बहुमुखी प्रतिभा के धनी विनायक की पहचान एक श्रेष्ठ इतिहासकार, राष्ट्रवादी चिन्तक, समाज सुधारक, कानूनविद्, लेखक, क्रान्तिकारी तथा अमर स्वाधीनता संग्राम सेनानी की रही है और सदैव रहेगी। उन्होंने सन् 1904 में क्रान्तिकारी संगठन 'अभिनव भारत' की स्थापना की और क्रान्तिकारियों के अनेक महत्वपूर्ण अभियानों का नेतृत्व किया, जिससे ब्रिटिश शासन की नींव हिल गई। उनकी छवि खंडित करने का प्रयास करते हुए उन पर ब्रिटिश एजेन्ट का निराधार आरोप लगाने वाले वामपंथ और जिहादी तत्वों के पास इस प्रसंग में कोई उत्तर नहीं है कि वीरसावरकर भारत के एकमात्र स्वाधीनता संग्राम सेनानी रहे जिन्हें ब्रिटिश शासन ने दो आजीवन कारावास की कालापानी सजा दी। ''सेल्युलर जेल की कालकोठरी में भयावह अत्याचार के बावजूद उनका मनोबल नहीं टूटा और वे पूर्ण जोश में हुंकार भरते थे - **''गरज उठे जयकार क्रान्ति का, गरज उठे जयकार। खुली छाती पर हंसकर झेले, भीषण वज्र प्रहार।''**

सन् 1924 में उन्हें कारागार से मुक्ति मिली तो वे पुनः क्रान्तिकारी गतिविधियों के साथ-साथ साहित्यिक एवं समाज सुधार गतिविधियों में जुट गए। उनकी प्रमुख रचनाओं में शामिल हैं 'कमला', 'गोमांतक', 'महासागर', '1857 का प्रथम स्वातंत्र्य संग्राम'', 'भारतीय इतिहास के छः स्वर्णिम पृष्ठ', 'हिन्दुत्व के पंच प्राण' तथा 'हिन्दुत्व'। हिन्दू राष्ट्रवाद तथा हिन्दुत्व विचारधारा के प्रमुख सिद्धांतों को प्रतिपादित करने में उनकी मुख्य भूमिका रही - तथा वे देश विभाजन के घोर विरोधी थे। लाला हरदयाल, मदनलाल ढींगरा इत्यादि अनेक अमर क्रान्तिकारियों ने स्वीकार किया था कि उनके मुख्य प्रेरणास्त्रोत थे वीर सावरकर। सन् 1937 में वे हिन्दू महासभा के अखिल भारतीय अध्यक्ष निर्वाचित हुए और कुल छः बार निरन्तर अध्यक्ष निर्वाचित हुए - जिससे उनकी लोकप्रियता और कार्य क्षमता प्रमाणित होती है। 1948 में गांधी हत्या का निराधार आरोप लगाकर उन्हें गिरफ्तार किया गया परन्तु शीघ्र ही न्यायालय द्वारा बाइज्जत बरी हो गए। 15 अगस्त 1947 को भारत की आजादी के बाद भी उनका राष्ट्रीय कार्य निरन्तर जारी रहा और 1961 में पुर्तगाली शासन से गोआ की स्वतंत्रता तक वे निरन्तर गोआ मुक्ति संग्राम से सक्रिय रूप से जुड़े रहे।

सामाजिक समरसता की बुनियाद मजबूत होने पर ही राष्ट्र की बुनियाद मजबूत होती है। इस सिद्धांत को जीवन्त स्वरूप देते हुए उन्होंने 1931 में मुम्बई में 'पतित पावन मंदिर' की स्थापना की। 25 फरवरी1931 को मुम्बई में 'अस्पृश्यता उन्मूलन सम्मेलन' की उन्होंने अध्यक्षता की तथा राष्ट्र को भेदभाव मिटाकर एवं सामाजिक समरसता के सूत्र में पिरोकर एक शक्तिशाली हिन्दू समाज की संरचना का संदेश दिया। 1966 में उन्होंने अन्न-जल का त्याग किया - तब उनकी पुत्री ने उनसे अन्न-जल ग्रहण करने का आग्रह किया - परन्तु उन्होंने अपनी पुत्री से यह मार्मिक वाक्य उत्तर में कहा - ''मुझे मेरी प्यारी सिंधु नदी के दर्शन करवा दो तो मैं अन्न-जल अवश्य ग्रहण करूँगा।'' अखण्ड भारत के खंडित होने से दुखी रहने वाले वीर सावरकर 26 फरवरी 1966 को 83 वर्ष की आयु में अनंतलोक की यात्रा पर चले गए - हम समस्त राष्ट्रवासियों को राष्ट्रप्रेम तथा राष्ट्र पर तन-मन-धन न्यौछावर करने का संदेश देकर।

रामधारी सिंह दिनकर जी की उक्त पंक्ति उनको समर्पित

''जो भरा नहीं है भावों से/बहती जिसमें रसधार नहीं
हृदय नहीं वह पत्थर है/जिसमें स्वदेश से प्यार नहीं।''

धरती माता, बाबादेव, पर्यावरण के प्रति कृतज्ञता की जनजातीय परंपरा-हलमा

डॉ. उत्तम मोहन मीणा

सामान्यतः मानव समाज प्रकृति से प्राप्त ही करता आया है। संसारभर के समाजों ने भौतिकता की चकाचौंध में धरती माता को लौटाने की परंपरा को विस्मृत कर दिया और इसके दुष्परिणाम भी भुगत रहा है। जनजातीय समुदाय का अपने पर्यावरण के साथ एक विशिष्ट तादात्म्य रहा है, इसके परिणामस्वरूप जनजातियों में प्रकृति माता के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने की अनेक परम्पराओं का निर्माण हुआ। जनजातीय समुदाय को सक्षम और समृद्ध बनाने का जन आंदोलन है 'हलमा', जो जन-सहभागिता के आधार पर सामुदायिक, संपोषणीय विकास के अध्याय लिख रही है। झाबुआ में 'शिवगंगा' नाम के स्वैच्छिक संगठन ने जल संकट के निदान में जनजातियों की विस्मृत परम्पराओं का स्मरण करवा कर एक जन आन्दोलन 2009-10 में प्रारंभ किया और तब से लागातार झाबुआ की हाथीपावा पहाड़ी पर हलमा हो रहा है।

शिवगंगा द्वारा प्रतिवर्ष अलग-अलग गांवों से सैकड़ों गठनायक बनाए जाते हैं, उन्हें प्रशिक्षण दिया जाता है और फिर वह हजारों गांवों में परिवारों से संपर्क कर उन्हें हलमा में सम्मिलित होने का निमंत्रण देते हैं। यह स्वयंसेवक परिवारों में जमीं माता को हराभरा और समृद्ध बना कर बाबादेव (शिव भगवान) की जटाओं को पानी से भरने का अपने पूर्वजों का संकल्प याद दिलाते हैं। जनजाति परिवार अपने साथ स्वयं के गेती, फावड़े, तगाड़ी और अपने परिवार का भोजन साथ लाते हैं और निर्धारित स्थान पर 2-3 दिन श्रमदान करते हैं। आवश्यकता होने पर यह लोग फाला (सामुदायिक कार्य करने के लिए आर्थिक सहयोग या चंदा) भी इकट्ठा करते हैं। इस वर्ष 300 स्वयंसेवकों ने 15 दिन संपर्क कर 11000 परिवारों को हलमा में निमंत्रण दिया। विगत एक दशक में इस जन आंदोलन से लगभग 10 लाख लोग प्रत्यक्ष जुड़ चुके हैं। देश दुनिया के अनेक संस्थान ओर स्वैच्छिक संगठन इसे स्टडी कर अपने क्षेत्रों में लागू कर जनजीवन को बेहतर बना रहे हैं।

झाबुआ की हाथीपावा पहाड़ी पर ग्रामवासियों ने अब तक 141000 कंटूर ट्रेंच बनाकर लगभग 12 सौ करोड़ लीटर वर्षा जल को संरक्षित किया है। कुछ ग्रामीण समुदायों ने 50-50 दिनों तक स्थानीय स्तर पर हलमा करके लगभग 840 करोड़ लीटर जलभरन क्षमता के 84 तालाबों का निर्माण कर लिया है और अपनी सिंचाई की आवश्यकता पर आत्मनिर्भर हो गए हैं। इसी प्रकार इस वर्ष भी 20 नए तालाब बनाने का लक्ष्य रखा गया है। इसी क्रम में झाबुआ के गोमला गाँव के लोगों ने मिलकर बाबादेव की पहाड़ी पर हलमा करके 2 किलोमीटर लम्बा रास्ता जनता के श्रम ओर आर्थिक सहयोग से बना दिया। मातानुवन परम्परा को पुनर्जीवित कर क्षेत्र में लगभग डेढ़ लाख पौधे लगाए गए हैं, जिन्हें पेड़ बनने तक की जिम्मेदारी भी स्थानीय लोगों द्वारा ली जाती है।

भील, भिलाला, पटेरिया जनजाति सहित क्षेत्र के लगभग सभी लोगों द्वारा भोलेनाथ या भगवान शिवजी को बाबादेव और धरती को जमीं माता के रूप में पूजा जाता है। अपने आराध्यों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के साथ ही जनजातीय समुदाय प्रकृति और पर्यावरण के संतुलन को भी बनाए रखने में सफल हो पा रहा है। इस परंपरा के परिणामस्वरूप कभी सूखा और बंजर सा रहने वाला यह क्षेत्र आज जल और जंगल के परिणाम से समृद्ध हो गया है, यहां के लोगो के पलायन की समस्या का भी लगभग समापन हो गया है।

लोकमाता अहिल्या बाई होलकर

पूज्य अहिल्याबाई होलकर
(31 मई 1725 - 13 अगस्त 1795)

अहिल्याबाई होलकर मराठा साम्राज्य की प्रसिद्ध महारानी तथा इतिहास-प्रसिद्ध सूबेदार मल्हारराव होलकर के पुत्र खण्डेराव की धर्मपत्नी थीं। उन्होने महेश्वर को राजधानी बनाकर शासन किया।

अहिल्याबाई ने अपने राज्य की सीमाओं के बाहर भारत-भर के प्रसिद्ध तीर्थों और स्थानों में मन्दिर बनवाए, घाट बँधवाए, कुओं और बावड़ियों का निर्माण किया, मार्ग बनवाए-काशी विश्वनाथ में शिवलिंग को स्थापित किया, जिसके दर्शन वर्तमान में हम सभी कर रहे हैं। हमारे प्रधानमंत्री ने जिन तीन मंदिरों का कारीडोर बनाया जिसमें मुख्य मंदिर शिवजी का माँ अहिल्या ने ही बनवाया था । भूखों के लिए अन्नसत्र (अन्नक्षेत्र) खोले, प्यासों के लिए प्याऊ बनवाए, मन्दिरों में विद्वानों की नियुक्ति शास्त्रों के मनन-चिन्तन और प्रवचन हेतु की। महेश्वर स्थित किले में उन्होंने विश्व प्रसिद्ध माहेश्वरी साड़ियों के निर्माण की व्यवस्था की, महिला उद्यमी को रोजगार मिलें ऐसी व्यवस्था जिसका संचालन भी स्वयं महिलाऐं ही करती रही। राज-काज में निपुण, जिनकी न्याय व्यवस्था की चर्चा पूरे भारत वर्ष में होती रही ।

अहिल्याबाई का जन्म चौंडी नामक गाँव में हुआ था जो आजकल महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के जामखेड में पड़ता है। दस-बारह वर्ष की आयु में उनका विवाह हुआ। 29 वर्ष की अवस्था में विधवा हो गई। पति का स्वभाव चंचल और उग्र था। वह सब उन्होंने सहा। फिर जब 42-43 वर्ष की थीं, पुत्र मालेराव का देहान्त हो गया। माँ अहिल्याबाई की आयु 62 वर्ष के लगभग थी, दौहित्र नत्थू चल बसा। 4 वर्ष पीछे दामाद यशवन्तराव फणसे न रहा और इनकी पुत्री मुक्ताबाई सती हो गई।

"महाराणा प्रताप" जिनके नाम से काँपते थे मुगल

महाराणा प्रताप का नाम भारत ही नहीं विश्व के इतिहास में उनकी बहादुरी, मातृभूमि के प्रति अगाध श्रद्धा, जीवनभर स्वतंत्र रहकर हार न मानने के कारण अमर है। उनका जन्म 9 मई, 1540 को राजस्थान के कुंभलगढ़ किले में हुआ था। पिता का नाम महाराणा उदय सिंह था और माता महारानी जयवंता बाई थीं। अपने परिवार की वह सबसे बड़ी संतान थे और 1573 को सिंहासन पर बैठे।

महाराणा प्रताप के समय दिल्ली पर मुगल शासक अकबर का राज था। अकबर के समय के राजपूत नरेशों में महाराणा प्रताप ही ऐसे थे, जिन्हें मुगल बादशाह की गुलामी पसंद नहीं थी। इसी बात पर उनकी आमेर के मानसिंह से भी अनबन हो गई थी, जिसका नतीजा यह हुआ कि मानसिंह के भड़काने से अकबर ने खुद मानसिंह और सलीम (जहांगीर) की अगुवाई में मेवाड़ पर आक्रमण करने के लिए भारी सेना भेजी। 18 जून, 1576 ई. में आमेर के राजा मानसिंह और आसफ खां के नेतृत्व में मुगल सेना और महाराणा की सेनाओं के बीच गोगुडा के नजदीक अरावली पहाड़ी की हल्दीघाटी शाखा के बीच युद्ध हुआ। इस लड़ाई को हल्दीघाटी के युद्ध के नाम से जाना जाता है। 'हल्दीघाटी का युद्ध' भारतीय इतिहास में प्रसिद्ध है। इस युद्ध के बाद महाराणा प्रताप की युद्ध-नीति छापामार लड़ाई की रही। इस युद्ध में न तो अकबर जीत सका और न ही राणा हारे। मुगलों के पास सैन्य शक्ति अधिक थी तो राणा प्रताप के पास जुझारू शक्ति की कोई कमी नहीं थी। उन्होंने आखिरी समय तक अकबर से लोहा लिया और उसे परेशान करते रहे। अपने राजसी अभिमान और सम्मान के साथ जीवन व्यतीत करते हुए लड़ाइयां लड़ते रहे।

भारतीय इतिहास में जितनी महाराणा प्रताप की बहादुरी की चर्चा हुई है, उतनी ही प्रशंसा उनके घोड़े चेतक को भी मिली। कुछ लोकगीतों के अलावा हिन्दी कवि श्यामनारायण पांडेय की वीर रस कविता 'चेतक की वीरता' में उसकी बहादुरी की खूब तारीफ की गई है। हल्दीघाटी के युद्ध में चेतक, अकबर के सेनापति मानसिंह के हाथी के मस्तक की ऊंचाई तक बाज की तरह उछल गया था। फिर महाराणा प्रताप ने मानसिंह पर वार किया। जब मुगल सेना महाराणा के पीछे लगी थी, तब चेतक उन्हें अपनी पीठ पर लादकर 26 फीट लंबे नाले को लांघ गया, जिसे मुगल फौज का कोई घुड़सवार पार न कर सका। प्रताप के साथ युद्ध में घायल चेतक को वीरगति मिली।

सु-व्यवस्थित भण्डारण से ही किसान की मेहनत सफल होगी

अनाज-भण्डारण :- मई का महीना अनाज भण्डारण के लिए सर्वोत्तम माना जाता है। खाद्यान्न दलहन और तिलहनी फसलों का भण्डारण अच्छी तरह से करें। अनाज को अच्छी तरह से धूप में सुखा लेने से नमी की 10 प्रतिशत कम हो जाती है। कटे व टूटे दानों को अलग कर लें। अनाज रखने वाले बोरों, कुंठलों, टिन की कोठी व अन्य कन्टेनरों को भी 2-3 दिन तक तेज धूप में रखें। जिससे उनमें छिपे कीटों के अण्डे, लाखा व सुंडियां इत्यादि नष्ट हो जावें। यदि भण्डारण हेतु पुराने बोरो का प्रयोग कर रहे हैं तो उन्हें मेलापियांन 50 ईसी नामक कीटनाशी की 2 मि.ली मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर उपचारित करके सुखा लें। भण्डारण करने वाले कमरों की दीवारों व फर्श को भी अच्छी तरह से साफ कर लें। खाद्यान्न को भण्डारित करने से पूर्व अच्छी तरह सुखाया जाये तो नमी की अधिकता के कारण भी तापमान बढ़ सकता है। जिससे न केवल अनाज में फफूंदी लग जाती है बल्कि वह सड़ भी जाता है। भण्डारण का कन्टेनर यदि एयरप्रूफ नहीं है तो भी अनाज नमी सोख लेता है। यदि भण्डारित अनाज में नमी व तापमान की अधिकता होती है तो अनाज में कीड़े व सूक्ष्म जीवों को अनुकूल वातावरण पनपने के लिए मिल जाता है। कमरों में भण्डारण करते समय बोरों को सीधे फर्श पर न रखकर लकड़ी की पट्टियों पर रखना चाहिए अन्यथा फर्श के जरिए अनाज भी नम होकर खराब हो जाता है।

बोरियों का मुंह एक-दूसरे की तरफ होना चाहिए। घुमन के लिए सल्फास तथा ई.डी.बी. आदि रसायनों का उपयोग किया जा सकता है। सल्फास की 1-2 गोली प्रति टन अनाज की दर से रखनी चाहिए, गोलियों को अनाज में रखने से पूर्व बारीक कपड़े में बांधकर ताकि अवशेष अनाज में न मिले। ई.डी.बी का उपयोग करने के लिए भण्डारित पात्र वायुरोधी होना चाहिए। इसका प्रयोग 3 मि.ली प्रति क्विटंल की दर से किया जाना चाहिए।

आलू-भण्डारण :- मालवा प्रान्त में आलू का उत्पादन बहुतायत होता है। घरों के अन्दर या खेतों पर ढेरों में रखे आलुओं में खुदाई के दो माह बाद सूखने अंकुरित होने व सड़ने की वजह से लगभग 15-20 प्रतिशत तक वजन में कमी आ जाती है। साथ ही आलू सिकुड़ने के कारण उचित मूल्य पर नहीं बिक पाता है। अतः उपरोक्त नुकसान से बचने के लिए शीत गृहों में आलू का भण्डारण नितान्त आवश्यक है। ऐसा करने से आलू की पैदावार

का एक बड़ा भाग सड़ने-गलने व सूखने से बचाया जा सकता है। किसान भाई मार्च से मई के अन्त तक स्वस्थ व साफ-सुथरे आलू को बगीचों अथवा कुओं (गड्डे) अथवा हवादार एवं छायायुक्त स्थानों पर 6 इंच मोटी पुआल/फूंस से अच्छी तरह ढेर को ढक कर रख सकते हैं। याद रहे ढेर की ऊँचाई 1 मीटर व जमीन पर चौड़ाई तीन मीटर से अधिक न हो इससे सिकुड़न व वजन में संभावित कमी बहुत घट जाती है।

बोध कथा : जो बोएगा, वही पाएगा

एक गांव का किसान जो दूध से दही और मक्खन बनाकर बेचा करता था, एक दिन उसकी पत्नी ने उसे मक्खन तैयार करके दिया। वह उसे बेचने शहर गया। वह मक्खन गोल पेड़े की शक्ल में था तथा हर पेड़े का वजन 1 किलो था। शहर में किसान ने उस मक्खन को हमेशा की तरह एक दुकानदार को बेच दिया और दुकानदार से चाय, चीनी, तेल, साबुन वगैरह खरीदकर अपने गांव चला गया। किसान के जाने के बाद दुकानदार ने एक पेड़े का वजन किया तो पेड़ा 900 ग्राम का निकला फिर तो उस दुकानदार ने हर पेड़े का वजन किया परंतु सभी 900 ग्राम के निकले। अगले हफ्ते किसान फिर से हमेशा की तरह मक्खन लेकर दुकानदार के पास पहुँचा। तो दुकानदार ने चिल्लाते हुए किसान से कहा चले जाओ, किसी बेईमान और धोखेबाज व्यक्ति से मुझे करोबार नहीं करना। मैं 900 ग्राम मक्खन को 1 किलो बताकर बेचने वाले व्यक्ति की शक्ल भी नहीं देखना चाहता। तब किसान बड़ी विनम्रता से बोला भाई हम तो गरीब लोग हैं हमारे पास माल तौलने के लिए बांट (वजन) नही है। मैं तो आपसे जो 1 किलो चीनी लेकर जाता हूं। उसी को तराजू के एक पलड़े में रखकर दूसरे पलड़े में उतने ही वजन का मक्खन तोल कर लें आता हूं। और वही आपको देता हूँ। तो भला धोखेबाज और बेईमान कौन है। भाइयों हम दूसरों को देंगे जो वही लौटकर आएगा चाहे वह, इज्जत हो, सम्मान हो या चाहे धोखा हो।

खरगुण दंगा-कारण अरु निकाळ

▸ दुर्गेश कुमार साध

खरगुण मऽ भगवान श्री रामनवमी की शोभायात्रा निकाळणऽ का टेम मऽ जी कई हुयो, ऊ एक सभ्य समाज का लेणऽ खूब घातक छे। सामान्य रूप सी निमाड़ खऽ एक शांत क्षेत्र मऽ गिण्यो जाएज। निमाड़ अनऽ मालवा अपणी मीठ्ठी जबान अनऽ सरसता का लेणऽ जाण्या जाएज। ऐका सी एकी संभावना खूबऽऽज कम थी कि जी लोग न खऽ एक भारतीय होणऽ का नातऽ हम अपणो समजांज, ऊज लोग भगवान श्री राम जी की शोभायात्रा पर दगड़ा फेंकणऽ जसो नीच काम करी सकज। मुस्लिम न नऽ सिर्फ दगड़ा न्री फेंक्या, बल्कि पेट्रोल बम नऽ सी केतरीज जगा आग भी लगाई नाखी। ई लोग नऽ की तैयारी केतरी जोरदार थी, ई ऐकाज सी मालूम पड़ी जायेज कि इन्नऽ नऽ की छत पर गंज सारी ईंट, दगड़ा, फरसी नऽ हमलो करनऽ का लेणऽ तैयार थी।

आखिर काई कारण छे कि हमारो समाज कई बखत लाचार दिखणऽ लगज ! उनखऽ समज नी आऊती कि असा बखत प काई करनुँ चाईजे। हम ई वात न खऽ पिछला कई बरस सी उपेक्षित करता रह्याज। पण एक वात या बी सोचणऽ वाळई छे कि माँजरी का डर सी डोळा मीचीं लेणऽ सी, उंदरा की परेशानी खतम नई होती। माँजरी तो वहाँज की वहाँज रह्येज। जी कई घट्यो, ओका सी अनेक प्रश्न उभा होयेज !

कुछ चिन्तन करनऽ योग्य बिन्दु ई छे -

1. एको एक कारण यो देखाएज कि ई लोग अपणा धर्मखऽऽज सब सी श्रेष्ठ माननऽ को भ्रम पाड़ई नऽ बठ्याज। इनको पूरो चिन्तन इस्लाम बनाम काफिर (गैर-मुस्लिम) कोज छे। ऐका कारण ई लोग दूसरा धर्म नऽ ख मान्यता नई देता।

2. दूसरो कारण इनकी किताब छे, जेका अनुसार सृष्टि का रचयिता एकमात्र उनका भगवानज छे। इनकी प्रार्थना मऽ भी ई कयेल छे कि उनका अलावा कोई खऽ भी पूजणुँ गुनाह छे। इनी वजह सी इनी बार दंगा नऽ मऽ मंदिर नऽ खऽ भी निशाणो बणायो। एक धर्म निरपेक्ष देश मऽ असी विचारधारा पऽ चर्चा होणुंज चाईजे।

3. पाकिस्तान सी भी ज्यादा जनसंख्या होणऽ का बावजूद इनखऽ कई सरकारी सुविधा नऽ मिलज। ऐका अलावा इनका अपणा कई अलग कानून छे। यदि अपणो देश एक धर्म-निरपेक्ष देश छे, तो इनका अलग कानून की वात समझ सी भाइरऽ छे।

4. धर्म का नाँव पर इन्नऽ नऽ मऽ एको छे। दूसरी तरफ हम अबी बी जाति नऽ मऽ बँटेल छे।

इनको निकाळ काई हुई सकज, एको चिन्तन बी बहोत जरूरी छे। कुछ बिन्दु ई छे -

1. प्रशासन खऽ असली अपराधी नऽ खऽ ढूँढी कऽ नऽ दंडित करनुँ चाईजे।

2. सबई हिन्दू समाज खऽ एकजुट हुई नऽ इनको आर्थिक बहिष्कार करनुँ चाईजे। घर मऽ लगण वाळा सबई सामान विधर्मी नऽ सी लेणऽ पऽ रोक लगाउणुँ चाईजे।

3. अपणा हिंदू समाज का बीच आपस मऽ एको होणु चाईजे। ओका लेणऽ समाज का प्रभावी लोग नऽ खऽ जी कई करनुँ पड़ऽ, ऊ करनुँ चाईजे।

4. प्रशासन खऽ दंगाई नऽ सी हुयेल नुकसान की पूरी भरपाई करनुँ चाईजे, इन्न नऽ का राशन कार्ड, वोटर कार्ड बी निरस्त (सस्पेंड) करी नाखणुँ चाईजे। इन्नऽ नऽ ख मिलनऽ वाळई सबई सरकारी सुविधा सी इनखऽ वंचित करी नाखणुँ चाईजे।

5. समाज का बड़ा बुजुर्ग नऽ खऽ अपणा परिवार मऽ भारत का सच्चा इतिहास अनऽ विधर्मी नऽ की सच्ची काईणी नऽ सुणाऊणुँ चाईजे। घर की माता-बईण नऽ खऽ आत्मरक्षा सिखाळणऽ का लेणऽ भेजनुँ चाईजे।

6. सोशल मीडिया की मॉनिटरिंग करनुँ चाईजे। हरेक मोहल्ला मऽ असी 'मोहल्ला समिति' नऽ बणणुँ चाईजे, जी मोहल्ला का साथ सोशल मीडिया की भी मॉनिटरिंग करऽ।

7. एक देश, एक कानून लागू कराडनऽ का लेणऽ सबखऽ एकजुट हुई नऽ सरकार पर दबाव बनाऊणुँ चाईजे।

8. सबसी मोठी वात, अपणा धर्म नऽ संस्कृति पर हरेक परिवार का बच्चा खऽ गर्व महसूस कराळण को भाव उत्पन्न होणुँ चाईजे।

थोड़ी में घणी

अशोक वर्मा

1) अपणा अंचल में हिन्दू नववर्ष बड़ों धूमधाम से मनायों । कयीं गाँव ने कयीं शहर सगला एक सरीखा भगवा ध्वजा से पटी गया था । घर घर भगवा झन्डो शान से लहरयी रियो है। जगे जगे शोभायात्रा ना निकाली । ऐसो उल्लास पेली बार देखणे में आयो । हिन्दूना को उत्साह देखी के जेहादीना को पेट दुख्यो, नववर्ष का उत्सव में रंग में भंग डालने की शुरुआत राजस्थान का करोली से हुई । गुड़ी पड़वा का दिन राम जी का जयकारा और भजन गातो जुलूस जैसे ही मुसलमान मोहल्ला में गयो, हर घर और छत से भाटा फेंकणू चालू हुई गयो । कई हिन्दू घायल हुया। हिन्दूना का घर दुकान और गाड़ीना के जलय दी । कारवायी का नाम पे राजस्थान की गेहलोत सरकार ने मुसलमान उत्पाती का साथ साथ घायल हिन्दूना के भी आरोपी बणय के जेल भेजी दिया ।

खरगोन में रामनवमी का जुलूस पे मसजिद से हमलो हुयो । फिर पूरा खरगोन में जहाँ हिन्दू कम है जेहादीना ने हिन्दूना का घर दुकान में लूटपाट कर आग लगाई । पुलिस अधिकारी के गोली मारी, गाड़ियां जलई, मन्दिर तोड़ दिया, मूर्ति खंडित करी अपणा सब चरित दिखाया। फिर दिल्ली का जहांगीरपुरी में हनुमान जन्म उत्सव की शोभायात्रा पर मस्जिद से हमलो हुयो । हमला करनेवाला रोहिंग्या मुसलमान की बस्ती का अतिक्रमण हटाने की कारवाही पर कपिल सिब्बल, वृंदा करात की टोली सुप्रीम कोर्ट से आधा घंटा में स्टे ली अई । कैसो है यो गिरोह, और कैसी है कोर्ट जो हर बखत अपराधीना की ढाल बणी जाय? करोली, खरगोन, सेंधवा, गुजरात, झारखंड, आन्ध्रप्रदेश, दिल्ली सब तरफ ऐक सरीखो पत्थर जेहाद करयो । बिचार करने की बात या है कि इना जेहादीना के हिन्दूना को त्योहार मनाणु क्यों नी सुवाय, इनका त्योहार पे हिन्दूना ने कदी भी ऐसो नी करयो । फिर कब तक हिन्दू ऐसो सेहतो रेगो अब इनका सभी जेहादना को उपाय हिन्दूना के करनो पड़ेगो ।

डीलिस्टींग..हमारा देश का संविधान में आदिवासी समाज का लिए आरक्षण की व्यवस्था करी है । पण ईसाई मिशनरी आदिवासीना को धरम बदली के ईसाई बणय री हैं । और आरक्षण को सबसे ज्यादा फायदो यी ईसाईना ली रिया है । आदीवासी समाज अपणो हक का लिए जागी रियो है और सरकार से मांग करी रियो हैं कि जिनने धरम बदली दियो उनके आदीवासी की लिस्ट से बाहर करो और सरकारी फायदो देणो बंद करो । इनी मांग के ली के धार, बड़वानी, अलीराजपुर, झाबुआ सहित अपणा प्रांत में सब जगे हजारों की संख्या में आदीवासी समाज ने रैली निकाल के डीलिस्टींग की मांग सरकार से करी।

सबसे बड़ी रामायण

आपको सबसे बड़ी रामायण की पुस्तक के बारे में बताने जा रहे हैं, इसे लकड़ी और कांच से बने शोकेस में मेहंदीपुर बालाजी हनुमान मंदिर में सुरक्षित रखा गया है। यह रामायण भोपाल के चार इमली स्थित हनुमान मंदिर में भक्तों के दर्शन के लिए रखी गई है।

भोपाल के प्रोफेसर अरुण खोबरे ने साल 2008 में अपने हाथों से रामायण लिखा है। अब इस रामायण को रथ यात्रा के रूप में काशी के रास्ते अयोध्या तक ले जाने पर काम कर रहे हैं। रामायण में 6 हजार से अधिक पन्ने हैं, हर पन्ने पर सिर्फ एक दोहा या एक चौपाई अंकित है। यह पूरी रामायण हाथ से लिखी गयी है **रामायण का वजन 170 किलो और लंबाई चौड़ाई 4.5 फीट के करीब है** प्रोफेसर खोबरे ने 5 महीने के अथक प्रयास से इस ग्रंथ को लिखा।

विश्व की सबसे बड़ी रामायण होने के चलते, इसे भारत वर्ल्ड रिकॉर्ड, रॉयल सक्सेस इंटरनेशनल बुक ऑफ रिकाड्र्स, ग्लोबल गोल्ड टेलेंट बुक ऑफ रिकाड्र्स, ओएमजी बुक ऑफ रिकाड्र्स में भी शामिल किया गया है।

छाछ पीने के फायदे

आयुर्वेद शास्त्र में छाछ की तुलना अमृत के साथ की है। शरीर के भीतर के घातक पदार्थ मूत्र के द्वारा बाहर निकालकर फेंकने की ताकत छाछ (तक्र) में है। शरीर की रोग प्रतिकारक क्षमताओं को बढ़ाने की ताकत इसमें है। छाछ का नियमित सेवन करने से शरीर बलवान होता है।

इसमें एक अति महत्व की बात है कि 3 दिन पूर्ण रूप से दूसरा कुछ भी बिना खाए केवल छाछ पर रहने से बहुत ज्यादा लाभ मिलता है। अपने शरीर का पंचकर्म अपने आप हो जाता है। शरीर से अनावश्यक चर्बी झड़ जाती है। इतना ही नहीं चेहरे के ऊपर अच्छा तेज आ जाता है और काले दाग निकल जाते हैं। चेहरा तेजपुंज फुर्तीला और तेजस्वी दिखाई देने लगता है।

छाछ में विटामिन - बी12, कैल्शियम, पोटैशियम, फॉस्फोरस ऐसे अनेक तत्व रहते हैं, जो शरीर के लिए लाभदायक रहते हैं। जिसका पेट साफ नहीं होता, पेट से आवाज निकलती है, उसे छाछ पीने से वह बीमारियां समाप्त होने लगती है। छाछ पीने से शरीर के 90 प्रतिशत कमियां भर के निकल आती है। उष्णता तुरंत कम होके अच्छी शांत नींद लगने लगती है। साधारण व्यक्ति भी अगर हर रोज छाछ पिए तो उसके शरीर की उष्णता कम होती है और ताकत बढ़ती है। छाछ पीने के यह 10 फायदे हम जानेंगे और कोल्ड ड्रिंक पीना बंद करेंगे-

1) छाछ पीने से मोटापा कम होता है

2) बार-बार पेशाब की तकलीफ है तो छाछ में नमक डालकर पीने से तकलीफ कम होती है

3) दही का पानी या छाछ पीने से मुंह के छाले कम हो जाते हैं

4) छाछ में अजवाइन डालकर पीने से पेट के अंदर के जंतु समाप्त हो जाते हैं

5) छाछ में गुड़ डालकर पीने से पेशाब में होने वाली जलन की तकलीफ कम होती है

6) छाछ में जायफल का पाउडर डालकर पीने से सर दर्द कम होता है

7) खाली पेट छाछ पीने से पेट दर्द की तकलीफ कम होती है

8) छाछ में शक्कर और काली मिर्च का पाउडर डालकर पीने से पित्त एसिडिटी की तकलीफ कम होती है

9) छोटे बच्चों के जब दांत निकलते हैं तो उनको चार चार चम्मच छाछ दिन में तीन चार बार पिलाने से दांत में होने वाली तकलीफ कम होती है

10) सबसे महत्व की बात की 3 दिन बिना कुछ खाए पिए छाछ पीने से अपने शरीर का पंचकर्म अपने आप हो जाता है। जिन्होंने पहले पैसे खर्च करके पंचकर्म किया है उन्होंने यह 3 दिन का प्रयोग करके देख लेना। आपके स्वयं ध्यान में आ जाएगी बात । तबीयत तो ठीक होगी ही और पैसा भी बचेगा। ऐसे 3 दिन का छाछ का प्रयोग 6 महीने में एक बार अवश्य करना चाहिए। भविष्य में होने वाले बड़े बीमारियों से भी टाला जा सकता है। होने वाली तकलीफ और औषधियों का खर्च भी बचेगा तो फिर छाछ पीना शुरू करेंगे, आज से ही कोल्ड ड्रिंक को बंद कर देंगे।

अत्यंत दुःखद

भारतीय सेना के वीर जवान अरुण शर्मा पिता मनोहर लाल शर्मा जी (निवासी हरगन खेड़ी वर्तमान पता कानड़) कुपवाड़ा में क्रॉस फायरिंग में शहीद होने का दुखद समाचार प्राप्त हुआ।

शहीद अरुण शर्मा जी की शहादत को कोटि-कोटि नमन

समाजसेवी कार्यकर्ता की कायरता पूर्ण हत्या

पलक्कड़ कस्बे में समाजसेवी संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक पूर्व प्रचारक की हत्या कर दी गई। श्रीनिवासन पर मेलमुरी में हमला किया गया। जहां वह गंभीर रूप से घायल हो गए जिसके बाद उन्हें एक निजी अस्पताल ले जाया गया जहां उन्हें मृत घोषित कर दिया गया।

राष्ट्र भावना से ओत प्रोत रहकर कार्य करने वाले व्यक्तियों के समाजहित में किए गए अच्छे कार्यों को जब पचा नहीं पाते हैं तो विरोधी विचारधारा वाले संगठन अपने अमानवीय राक्षसी कृत्य पर उतारू होकर इस प्रकार का जघन्य हत्याकाण्ड पिछले कई वर्षों से केरल में कर रहे हैं और इसकी मौन स्वीकृति वहां की विरोधी विचारधारा वाली सरकार दे रही है।

श्रीनिवासन एक बिजनेस यूनिट में काम कर रहे थे, तभी तीन मोटर साईकिल पर आए 5 हमलावरों ने उन पर हमला कर दिया। एक प्रत्यक्षदर्शी वासुदेवन ने बताया कि हमलावरों के हाथों में कुल्हाड़ी थी जिससे उन्होंने हमला किया था। बता दें कि श्रीनिवासन के पूरे शरीर पर चोट के निशान थे।

संजीत की भी हुई थी हत्या - पलक्कड़ में इससे पहले आरएसएस के संजीत की जघन्य हत्या की गई थी। 27 वर्षीय एस संजीत के शरीर पर 50 से ज्यादा बार धारदार हथियार से वार किया गया।

धार्मिक उन्माद फैलाने का षड्यंत्र करने की बात पर दिग्विजय सिंह के विरुद्ध मामला पंजीबद्ध

हिन्दू विरोधी कार्यों को प्राथमिकता में रखकर ऐसे कार्य अनेक बार करते हुए देखे गए कांग्रेस पार्टी के राज्यसभा सांसद दिग्विजय सिंह पर पुलिस में धारा 153 ए, 295 ए, 465, 505 (2) के तहत मामला पंजीबद्ध किया है। दिग्विजय सिंह के विरुद्ध धार्मिक उन्माद फैलाने का षडयंत्र कर प्रदेश में अस्थिरता लाने के लिए यह मामला पंजीबद्ध किया गया है।

खरगोन में श्रीरामनवमी की शोभायात्रा पर मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र में हुए पथराव के बाद दिग्विजय सिंह ने मंगलवार को एक झूठा फोटो ट्वीट किया था, जिसमें एक युवक मस्जिद के ऊपर चढ़कर भगवा झंडा फहरा रहा था। उनका यह फोटो स्थिति के अनुसार गलत पाया गया। जिसके बाद दिग्विजय सिंह के विरुद्ध मामला पंजीबद्ध किया गया। पूर्व मुख्यमंत्री व राज्यसभा सांसद को यह कृत्य शोभा नहीं देता है, इससे उन्माद फैल सकता था।

न्याय - शीर्ष अदालत ने बढ़ाया आत्मरक्षा का दायरा, राजस्थान हाईकोर्ट का फैसला पलटा

परिवार पर हमला हो तो कानून हाथ में ले सकते है : सुप्रीम कोर्ट

सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि यदि परिवार पर कोई हमला करता है, तो बचाव में पीड़ित कानून हाथ में ले सकता है। कोर्ट ने आत्मरक्षा के अधिकार के व्यापक दायरे की व्याख्या करते हुए यह बात कही।

यह फैसला उन दो व्यक्तियों के मामले में आया है, जिन्हें अपने पड़ोसियों पर हमले के आरोप में ट्रायल कोर्ट ने दोषी ठहराया था। बाद में राजस्थान हाईकोर्ट ने दोषियों को दो साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई थी। लेकिन सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस दीपक मिश्रा और जस्टिस शिव कीर्ति सिंह ने राजस्थान हाईकोर्ट का फैसला पलटते हुए दोनों आरोपियों को बरी कर दिया। पीठ ने कहा कि मामले से जुड़े तथ्यों में थोड़ी विसंगतियां हैं। यह सही था कि दोनों दोषियों ने अपने पड़ोसियों पर हमले किए थे, लेकिन पुलिस इस बात को पेश करने में नाकाम रही थी कि दोनों ने हमले क्यों किए थे।

क्या था मामला - दो परिवारों के झगड़े में एक पक्ष ने दोषी करार दिए गए दो लोगों के माता-पिता पर हथियारों से वार किए, जिससे उनके पिता घायल हो गए और बाद में मौत हो गई। जब दोनों ने माता-पिता पर हमला होते देखा तो उन्होंने बल प्रयोग किया।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा - आवेदनकर्ताओं के माता-पिता को पीटा जा रहा था। यह एक अहम कारक था। ऐसे में उनका बल प्रयोग करना गलत नहीं था, अभियोजन इसे मजबूती से नहीं रख सका। हमले में एक व्यक्ति की मौत भी हुई, उसका कारण नहीं पता लगाया जा सका। इस कारण से दोनों को दोषी करार दिया गया।

लव जिहाद का सबसे बड़ा मामला ग्वालियर में इमरान ने मंदिर में शादी की; फिर दो भाई और मौलाना से रेप कराया

इमरान ने खुद को राजू बताकर हिन्दू से की शादी

ग्वालियर में लव जिहाद का बड़ा मामला सामने आया है। यहां मुस्लिम लड़के ने धर्म छिपाकर हिंदू लड़की से मंदिर में शादी की। फिर अपने दो भाई और मौलाना से रेप कराया। युवती का आरोप है कि दो बार उसका गर्भपात कराया। 6 महीने तक बंधक बनाकर जानवरों जैसा सलूक करते रहे। पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने आरोपियों पर केस दर्ज कर लिया है। आरोपी इमरान खान है, जिसने खुद को राजू बताकर शादी की थी। 22 साल की पीड़िता डबरा जंगीपुरा की रहने वाली है। उसने पुलिस को बताया कि आरोपी जनवरी 2021 में उसे एक कार्यक्रम में मिला था। उसने अपना नाम राजू जाटव बताया था।

हमारे बीच दोस्ती हो गई। 15 जून 2021 को ग्वालियर से इमरान उसे गाड़ी से डबरा घुमाने ले गया। यहां कोल्ड ड्रिंक में नशीला पदार्थ मिलाकर उसके साथ रेप किया। वह गर्भवती हो गई तो अपनी मां सुग्गा बाई से मिलवाया। उसकी मां ने बदनामी का हवाला देते हुए मेरा गर्भपात करा दिया।

18 सितंबर 2021 को मंदिर में हिंदू रीति-रिवाज से इमरान ने खुद को राजू बताकर शादी कर ली। ग्वालियर के सिटी सेंटर के एक होटल में शादी की पार्टी भी दी गई।

भाइयों और मौलाना से कराया रेप - युवती ने पुलिस को बताया कि शादी के बाद वह ससुराल पहुंची, तब उसे आरोपियों के मुस्लिम होने का पता चला। इमरान और उसके भाई पुन्नी व अमन ने उसके साथ रेप किया। तीनों भाई उसके साथ रेप करते थे। मौलाना ओसामा खान से भी उसका रेप करवाया। मौलाना ने उससे कहा कि हिंदू रीति से की गई शादी उनके धर्म में मान्य नहीं है, इसलिए मुस्लिम रीति-रिवाज से शादी करनी होगी। उसने निकाह करवा दिया। इसके बाद उसने रेप किया। पति कमरे के बाहर खड़ा रहा। सास भी बाहरी लोगों को लेकर आती थी और उसका रेप करवाती थी।

6 महीने तक बंधक बनाकर रखा- पीड़िता के मुताबिक आरोपी उसे बंधक बनाकर रखते थे। उसे सिर्फ बाथरूम के लिए कमरे से निकाला जाता था। वह दोबारा गर्भवती हो गई तो सास ने उसे सीढ़ियों से धक्का दे दिया, जिससे दूसरी बार गर्भपात कराना पड़ा। 20 अप्रैल को हमेशा की तरह देवर पुन्नी खान उसके कमरे में आया। रेप करने के बाद वह कमरे की कुंडी खुली छोड़कर चला गया। इससे वह भागकर सीधी पुलिस के पास पहुंची।

वहशी डॉक्टर इम्तियाज, मुस्लिमों का नया शैतान

डॉक्टर को धरती का भगवान कहा जाता है। उस पर किसी भी धर्म का ठप्पा नहीं लगा होता है। वह मानवता की सेवा करने वाला व मरीजों को ठीक करने वाला अपना कार्य पूरी ईमानदारी से निभाता है। इन सब बातों पर इस मुस्लिम शैतान डॉ इम्तियाज ने अपने वहशीपन के कारण बट्टा लगा दिया।

पुख्ता सूचना मिलने पर डॉक्टर्स की संस्था पीसीपीएनडीटी और एनएचएम के निदेशक डॉ. जितेन्द्र सोनी के सुपरविजन में की गई कार्यवाही में डॉ. इम्तियाज को हिन्दू महिलाओं की कोख के बच्चों को हत्या कर उनके शव को काट काट कर चिमटे से और प्लायर से खींच-खींच कर बाहर निकालने का घिनौना काम करते हुए पकड़ा है जिसकी संख्या 50 उसने स्वयं कबूल की है।

पुलिस निरीक्षक जितेंद्र गंगवानी ने बताया कि स्थानीय पीसीपीएनडीटी कोऑर्डिनेटर सरला दाधीच को इसकी जानकारी मिली थी। आरोपी डॉक्टर मजहबी जुनून में इतना अंधा था की उसे हिंदुओं के गर्भ को देखते ही मार डालने को लालायित रहता। आरोपी डॉक्टर इम्तियाज गर्भ में ही शिशु की हत्या कर देता था खासतौर पर महिला हिंदू होने पर। इसी को पकड़ने के लिए पुलिस ने हिंदू महिला डॉक्टर को राजी किया जो कि प्रेग्नेंट थी। बिछाए जाल के अनुरूप शैतानी डॉक्टर के ही एक साथी पाल रोड स्थित अस्पताल के ओटी असिस्टेंट से डिकॉय गर्भवती महिला का परिजन बनकर पुलिस के ही एक जवान ने संपर्क किया। इस जानकारी के बाद शुक्रवार सुबह डिकॉय प्रेग्नेंट महिला को उसका साथी असिस्टेंट डॉक्टर इम्तियाज के पास सुभाष नगर बीएसएनएल ऑफिस के पीछे किराए के मकान पर लेकर गया। जहां डॉ. इम्तियाज ने जैसे ही अपना गर्भ को गिराने के उद्देश्य से काम शुरू किया ओर टीम ने उसे दबोच लिया।

इंदौर में वनवासी विदुषी ने व्यासपीठ से सुनाई रामकथा

कथा शुभारंभ के पूर्व गीता भवन परिसर में रामचरित मानस और विदुषी गीता बहन की शोभायात्रा निकाली गई। गीता भवन में यह पहला मौका था जब एक वनवासी बहन को हर्ष ध्वनि और जयघोष के बीच व्यासपीठ पर विराजित किया गया। गीता बहन मूलतः उड़िया भाषी हैं और उन्हें हिन्दी नहीं आती थी, लेकिन एकल अभियान के तहत प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद 15 वर्षों से वे बहुत सरल शब्दों में हिन्दी में कथा सुनाती हैं। प्रारंभ में दीप प्रज्ज्वलन के बाद व्यासपीठ का पूजन वनबंधु परिषद के अध्यक्ष ने किया।

रामकथा भारत भूमि की गौरव गाथा तो है ही, एक आदर्श परिवार के रिश्तों को मजबूत बनाने की भी प्रेरणा देती है। प्रभु राम को मर्यादा पुरूषोत्तम कहा गया है, क्योंकि उनके जीवन चरित्र में कहीं कोई दोष नहीं है। यह निर्दोषता ही उन्हें भगवान बनाती है। रामकथा में दुर्लभ मनुष्य जीवन को धन्य बनाने के अनेक मंत्रों का खजाना भरा हुआ है, यह सभी तरह के पापों का नाश करती है। इस कथा में माता-पिता के लिए आदर, गुरूजनों के लिए श्रद्धा, बंधु-बांधवों के लिए स्नेह, वनवासियों के लिए परम प्रेम और सेवक पर अटूट विश्वास के अनेक प्रसंग हैं, जो बदलते समाज के लिए प्रेरणा का विषय है। रामकथा कोई कहानी नहीं,

मनुष्य के लिए बनाई गई आचार संहिता है। उक्त विचार विदुषी गीता बहन ने श्रीहरि सत्संग समिति द्वारा आयोजित तीन दिवसीय रामकथा के शुभारंभ सत्र में व्यक्त किए। उन्होंने रामकथा की महिमा बताते हुए कहा कि जीवन में जब भी अवसाद, तनाव, अपयश या भय की स्थिति बने तो श्रीराम चरित मानस की शरण में चले आइए। परिवार में नियमित रूप से सामूहिक सुंदरकांड और हनुमान चालीसा के पाठ होना चाहिए। राम और हनुमान की भक्ति से परिवार और कारोबार में सुख, शांति, आरोग्य और समृद्धि आती है। राम नाम का स्मरण ही सबसे बड़ी भक्ति है।

जलियांवाला बाग स्मृति दिवस पर विशाल स्वराज यात्रा

स्वाधीनता के अमृत महोत्सव के अवसर पर इंदौर में 'जलियांवाला बाग स्मृति दिवस' पर स्वराज अमृत महोत्सव समिति द्वारा विशाल स्वराज यात्रा का आयोजन किया गया। जिसमें हजारों की संख्या में नागरिकों ने सहभागिता की।

इंदौर के विभिन्न 75 चौराहों से निकाली गयी स्वराज यात्रा चिमनबाग मैदान पहुंची। उपस्थित नागरिकों ने जलियांवाला बाग के उन बलिदानियों के प्रति कृतज्ञता समर्पित की जिन्हे जनरल डायर ने नृशंसता पूर्वक पार्क में घेर कर गोलियों से भून दिया था। वक्ताओं ने अपने संबोधन में कहा कि भारत कभी भी पूर्ण पराधीन नहीं रहा और जो हिस्सा भी पराधीन हुआ उन्होंने अपनी पराधीनता स्वीकार नहीं की, हमेशा संघर्ष किया।

श्रीमंत बाजीराव पेशवा पुण्यतिथि कार्यक्रम

श्रीमंत बाजीराव पेशवा (प्रथम) पुण्यतिथि कार्यक्रम उनके समाधि स्थल खरगोन के रावेरखेड़ी में सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में विहिप के विनायकराव देशपांडे व आरएसएस के बलिराम पटेल ने अपने विचार प्रकट किए। वक्ताद्वय ने श्रीमंत बाजीराव पेशवा के जीवन उनके द्वारा राष्ट्र की रक्षार्थ किये गए युद्धों, संघर्षो और त्याग के विषय में बताया। बाजीराव पेशवा अपराजेय योद्धा थे जिन्होंने जीवन में एक भी युद्ध नहीं हारा।

कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में मध्यप्रदेश के कृषि मंत्री कमल पटेल, सांसद गजेंद्र पटेल व विधायक सचिन बिरला उपस्थित रहे।

समाज को मर्यादा सिखाने वाले पुरुषोत्तम श्रीरामजी को नई शिक्षा नीति में पढ़ाया जाएगा

मध्यप्रदेश में अब बीए प्रथम वर्ष के छात्र भगवान श्री राम के बारे में पढ़ेंगे। उच्च शिक्षा विभाग ने रामचरितमानस का व्यावहारिक दर्शन नाम से सिलेबस तैयार किया है। इसका 100 नंबर का पेपर रहेगा। इसे दर्शन शास्त्र विषय में रखा गया है। यह सभी के लिए अनिवार्य न होकर वैकल्पिक रहेगा। यह सब्जेक्ट हिंदी और दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर पढ़ाएंगे। यानी जहा सिर्फ हिंदी के प्रोफेसर हैं, तो वहां वे और जहां दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर हैं, वहां वही यह विषय पढ़ाएंगे। यह इसी सत्र यानी 2021-2022 में शामिल किया गया है। इसका मतलब इसी साल से स्टूडेंट्स को यह पढ़ाया जाएगा।

विषय को पढ़ाने के उद्देश्य : आदेश के मुताबिक, विषय का मुख्य उद्देश्य हैं पढ़ाई के बाद छात्र व्यक्तित्व विकास के विभिन्न आयामों पर केंन्द्रित होकर संतुलित नेतृत्व क्षमता व मानवतावादी दृष्टिकोण को विकसित करने योग्य बने। छात्र उन जीवन मूल्यों को भी जान सकें, जिसकी समाज में आज जरूरत है। छात्र तनाव प्रबंधन और व्यक्तित्व विकास के क्षेत्र में प्रेरक कुशल वक्ता बन सके।

नई शिक्षा नीति में यह भी - नई शिक्षा नीति 2020 में प्रदेश के कॉलेजों में बीए फर्स्ट ईयर के नए सिलेब्स शामिल किए गए हैं। इसमें महाभारत, रामचरितमानस, योग और ध्यान हैं। इसके मुताबिक, श्री रामचरितमानस अप्लाइड फिलॉसफी को वैकल्पिक विषय के रूप में रखा गया है।अंग्रेजी के फाउंडेशन कोर्स में फर्स्ट ईयर के छात्रों को सी राजगोपालचारी की महाभारत की प्रस्तावना पढ़ाई जाएगी। अंग्रेजी और हिंदी के अलावा, योग और ध्यान को भी तीसरे फाउंडेशन कोर्स के रूप में पेश किया गया है। इसमें ओम ध्यान और मंत्रों का पाठ शामिल है।

मुस्लिम अबु जैद ने राहुल बन इंस्टाग्राम पर की दोस्ती

इंदौर में लव जिहाद का मामला सामने आया है। यहां की 17 साल की लड़की की दोस्ती इंस्टाग्राम पर उत्तर प्रदेश के मुस्लिम युवक से हो गई। युवक ने अपनी पहचान छिपाते हुए नाम राहुल बताया। नाबालिग के जन्मदिन पर उससे मिलने इंदौर आ गया। वह लड़की को झांसे में लेकर अपने साथ लखनऊ ले जाने की फिराक में था। आरोपी को पकड़कर एमआईजी पुलिस को सौंप दिया गया। पुलिस ने अपहरण और लव जिहाद का केस दर्ज किया है।

टीआई अजय वर्मा के मुताबिक अमर टेकरी में रहने वाली लड़की की मां ने शिकायत की है। पुलिस ने 27 साल के **अबू जैद पुत्र कलीम निवासी गाजीपुरा,** भदौही (उ.प्र.) को पकड़ा है। आरोपी नाबालिग को अपने साथ ले जाने की तैयारी में था। पूछताछ में उसने बताया कि **नाबालिग से इंस्टाग्राम पर दोस्ती हुई थी** – अबू नाबालिग से 6 महीने से बात कर रहा था। अबू ने अपना नाम राहुल बताया था। उसने लड़की को मिलने बैरवा समाज की धर्मशाला के पास बुलाया। लड़की घर से चली गई। जब वह घर नहीं लौटी तो मां ने ढूंढना शुरू किया। जिसमें रहवासियों की मदद ली। जब वह अबू के साथ मिली तो समाज के लोग अबू को पीटते हुए थाने लेकर पहुंचे ।

पिता नहीं, घर पर अकेली रहती थी लड़की – पुलिस के मुताबिक नाबालिग 11वीं में पढ़ाई कर रही है। उसके पिता की कुछ समय पहले मौत हो गई थी। मां फैक्ट्री में काम करती है, इसलिए दिन भर लड़की घर में अकेली रहती है। इस दौरान सोशल साइट्स पर उसकी जान पहचान अबू से हुई।

नाम के है जनजाति असली में ईसाई

डीलिस्टिंग इसलिए जरूरी है.. यह विवाह पत्रिका देखो यह पत्रिका बताती है कि ईसाई बन चुके लोग वनवासियों के हकों पर कैसे डाका डाल रहे हैं, पत्रिका में नाम सब आदिवासी लेकिन अंदर से पूर्णरूपेण इसाई अपनी सारी आदिवासी परंपराओं को छोड़ ईसाई बन चुके लोग सिर्फ आदिवासी नाम का उपयोग आदिवासियों के हकों से नौकरी छीनने आदिवासी कोटे से पंच सरपंच विधायक के चुनाव लड़ने के लिए उपयोग करते हैं लेकिन असल में यह इसाई हो चुके हैं इनके विवाह ईसाई रीति नीति से होते हैं मरने पर यह ताबूत में गाड़ते है, विवाह पत्रिका चर्च और ईसाईयत के अनुरूप छपवाते है। लेकिन नाम नहीं बदलते क्योंकि नाम बदल लिया तो यह लोग आदिवासियों के हकों पर डाका नहीं डाल पाएंगे आदिवासी आरक्षण का फायदा नहीं उठा पाएंगे। बेचारा असली आदिवासी इसीलिए तो डीलिस्टिंग की मांग कर रहा है कि सरकार इन कन्वर्ट ईसाईयों को आदिवासी सूची से हटाए और इन लोगों को ईसाई सूची में डालें ताकि यह लोग आदिवासियों के नौकरियों चुनाव सहित किसी भी कोटे में आदिवासी बनकर डाका ना डाल सके। चर्च और चर्च से जुड़े वामपंथी संगठन बहुत चालाकी से आदिवासी लोगों के हकों पर डाका डाल रहे हैं। असली आदिवासी समाज जो इन कन्वर्ट ईसाईयों को आदिवासी सूची से हटाने की मांग कर रहा है, उस पर डीलिस्टिंग तुरंत शुरू होनी चाहिए। डीलिस्टिंग के समय इन लोगों को दो ऑप्शन दिया जाना चाहिए या तो घर वापसी करो, सनातन आदिवासी परंपराओं का पालन करो या फिर आदिवासियों के सारे हक अधिकारों को छोड़ो और ईसाई सूची में शामिल हो जाओ।

लव जिहाद पर नई फिल्म द कन्वर्जन

'द कन्वर्जन' एक हिंदी ड्रामा फिल्म है जिसका निर्देशन विनोद तिवारी द्वारा किया गया है। फिल्म में विन्ध्या तिवारी, प्रतीक शुक्ला और रवि भाटिया मुख्य भूमिका में नजर आये हैं। फिल्म की कहानी लव-जिहाद के बहाने धर्मांतरण को दर्शाती है, जो की बनारस शहर की है, और वहां के प्रसिद्ध घाटों पर इस फिल्म की शूटिंग हुई है।

कोरोना महामारी के चलते लंबे समय तक सिनेमाघरों में ताले लगे हुए थे। ऐसे में कई फिल्मों पर असर पड़ा था और उनकी रिलीज डेट को आगे बढ़ा दिया था। इन फिल्मों **'द कन्वर्जन'** भी शामिल थी। लव जिहाद पर बनी **'द कन्वर्जन'** अब 6 मई को रिलीज के लिए तैयार है। लव जिहाद जैसे गंभीर मुद्दे को पेश करती है। हरियाणवी सिंगर सपना चौधरी भी फिल्म के एक गाने में दिखाई देंगी। इस फिल्म में एक हिंदू लड़की और मुस्लिम लड़के में प्यार दिखाया जाता है, लेकिन यह प्यार सिर्फ दिखावा है और कैसे लव जिहाद के जरिए धर्मांतरण का काम होता है।

Azadi Ka Amrit Mahotsav

SHAKTI
PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.

शक्ति पत्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल-दर-साल फायदा पहुंचाएं.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख-रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण-अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्त्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

- HIGH PERFORMANCE CHIP
- MULTIPLE PROTECTION
- AUTOMATIC RECOGNITION
- LIGHT EFFICIENCY TIME CONTROL
- PWN CHARGE
- SIMPLE INSTALLATION

कार्यप्रणाली

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर - 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला-धार (म.प्र.) - इंडिया फोन.: +91-7292-410500
ई-मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: 1800 103 5555

* नियम व शर्तें लागू

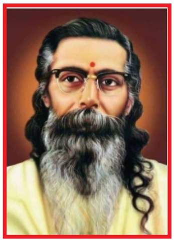

श्री गुरूजी
संघ के द्वितीय सरसंघचालक
पुण्यतिथि : 5 जून

भगवान बिरसा मुण्डा
कुशल संगठन एवं जननायक
शहीद दिवस : 9 जून

शहीद ऊधम सिंह
श्रेष्ठ क्रांतिकारी
शहीद दिवस : 13 जून

राजा दाहर सिंह सिंधु
सिन्धु सम्राट
शहीद दिवस : 16 जून

बाला साहब देवरस
संघ के तृतीय सरसंघचालक
जयंती : 16 जून

वीरागंना लक्ष्मीबाई
झाँसी की रानी
बलिदास दिवस : 18 जून

डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार
जनसंघ संस्थापक एवं प्रथम सरसंघचालक
पुण्यतिथि : 21 जून

रानी दुर्गावती
गढ़ मंडला की रानी
बलिदान दिवस : 24 जून

बंकिमचन्द्र चटर्जी
प्रसिद्ध उपन्यासकार
जयंती : 26 जून

दादाराव परमार्थ
कर्मठ कार्यकर्ता
पुण्यतिथि : 26 जून

महाराजा रणजीत सिंह
नीतिवान राजा
पुण्यतिथि : 26 जून

शिवराम पंत जोगलेकर
देहदानी
पुण्यतिथि : 29 जून

जून माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. ०२ रम्भा तीज व्रत
ता. ०३ विनायकी चतुर्थी व्रत
ता. ०९ गंगा दशहरा
ता. १० निर्जला एकादशी व्रत
ता. १४ वट सावित्री पूर्णिमा व्रत
ता. १७ गणेश चतुर्थी व्रत
ता. २७ शिव चतुर्दशी व्रत
ता. २९ स्नानदान अमावस्या

बुक-पोस्ट

जाग्रत मालवा

प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्राकंण ऑफसेट ए-11/डी, पोलोग्राउन्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731 -3551341